द्वितीय शैक्षणिक भ्रमण प्रतिवेदन

२१ दिवसीय प्राकृत भाषा अध्ययन कार्यशाला

(केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली एवं प्राकृत भाषा विकास फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित)

कार्यशाला की अवधि: 25 दिसंबर 2025 से 14 जनवरी 2026

शैक्षणिक भ्रमण की तिथि: 4 जनवरी 2026

भ्रमण मार्ग: नैनागिरि → श्री नेमिगिरि → पजनारी → पुरातात्त्विक नगरी धामनी → मदनपुर → गिरारजी → अंबर माता मंदिर → नैनागिरि

मार्गदर्शकगण:

* प्रो. कमलेश जैन, जयपुर
* डॉ. धर्मेन्द्र जैन, जयपुर
* डॉ. प्रभात कुमार दास, जयपुर

संयोजक:डॉ. आशीष जैन आचार्य, शाहगढ़ (सागर)

र

र्शन

ो

य,

❖ भूमिका:

केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय तथा प्राकृत भाषा विकास फाउंडेशन के संयुक्त प्रयास से जैन सिद्धक्षेत्र नैनागिरि में दिनांक 25/12/2025 से 14/01/2026 तक 21 दिवसीय प्राकृत भाषा शिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का उद्देश्य केवल प्राकृत भाषा का अध्यापन ही नहीं, बल्कि प्राचीन भारतीय इतिहास, विरासत, संस्कृति तथा पुरातत्त्व के प्रति विद्यार्थियों में समग्र एवं गहन दृष्टि विकसित करना भी था। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु कार्यशाला के अंतर्गत अनेक शैक्षणिक भ्रमण आयोजित किए गए।

दिनांक 04/01/2026 (रविवार) को इस कार्यक्रम का द्वितीय शैक्षणिक भ्रमण संपन्न हुआ, जिसमें जैन परंपरा से संबद्ध पाँच महत्वपूर्ण स्थलों तथा एक प्रमुख हिंदू मंदिर का अवलोकन किया गया। ये स्थल थे– श्री नेमिगिरि मंदिर, पजनारी, पुरातात्त्विक नगरी धामनी, मदनपुर, गिरारजी तथा अंबर माता मंदिर।

इस भ्रमण के प्रमुख मार्गदर्शक प्रो. कमलेश जैन, डॉ. धर्मेन्द्र जैन एवं डॉ. प्रभात कुमार दास थे, जबकि डॉ. आशीष जैन आचार्य इस भ्रमण के मुख्य संयोजक रहे।

1. श्री नेमिगिरि मंदिरः

द्वितीय शैक्षणिक भ्रमण का प्रथम गंतव्य श्री नेमिगिरि जैन तीर्थ था। 4 जनवरी 2026, रविवार प्रातः लगभग आठ बजे हम इस पवित्र जैन तीर्थक्षेत्र में पहुँचे।

स्थिति: यह मध्य प्रदेश के सागर जिले के बांदा तहसील में स्थित है, जो सागर नगर से लगभग 30 किलोमीटर दूर है।

धार्मिक महत्व: यह स्थल 'अतिशय क्षेत्र' के रूप में प्रसिद्ध है। आचार्य दयासागर जी महाराज के निर्देशन में इस तीर्थ का निरंतर विकास हो रहा है।

प्रधान मंदिर: इस तीर्थ के मूल नायक प्रथम जैन तीर्थंकर भगवान आदिनाथ हैं।

स्थापत्य एवं विशेषताएँ:

यहाँ एक भव्य चौबीसी मंदिर (२४ तीर्थंकरों का मंदिर) तथा नवग्रह मंदिर स्थित है। वर्तमान में एक विशेष गुफा मंदिर तथा रत्नजटित प्रतिमा की स्थापना का कार्य प्रगति पर है, जो श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र है।

2. पजनारी जैन मंदिर:

भ्रमण का द्वितीय स्थल पजनारी जैन मंदिर था।

स्थिति: पजनारी जैन मंदिर मध्य प्रदेश के सागर जिले की बांदा तहसील के पजनारी ग्राम में 150 फुट ऊँची पहाड़ी पर स्थित है।

धार्मिक महत्व: यह एक प्रसिद्ध 'अतिशय क्षेत्र' है।

प्रधान प्रतिमा: मुख्य मंदिर में भगवान शांतिनाथ जी की लगभग 1.25 मीटर (साढ़े चार फुट) ऊँची पद्मासन मुद्रा में प्रतिमा स्थापित है। इसके अतिरिक्त भगवान अरहनाथ जी एवं भगवान कुंथुनाथ जी की लगभग 2 मीटर (सात फुट) ऊँची कायोत्सर्ग मुद्रा में प्रतिमाएँ भी विद्यमान हैं।

ऐतिहासिक महत्व: इस मंदिर का निर्माण श्रेष्ठी पन्नाशाह द्वारा कराया गया था। मंदिर के आसपास पहाड़ी ढलानों में प्राचीन गुफाएँ भी दृष्टिगोचर होती हैं।

सुविधाएँ: तीर्थक्षेत्र में श्रद्धालुओं के लिए धर्मशाला, आवास कक्ष तथा भोजन की समुचित व्यवस्था उपलब्ध है।

3. *पुरातात्विक नगरी धामनी:*

तृतीय गंतव्य ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक नगरी धामनी थी।

स्थिति: यह स्थल सागर जिला मुख्यालय से लगभग 50-55 किलोमीटर उत्तर दिशा में झाँसी मार्ग पर स्थित है।

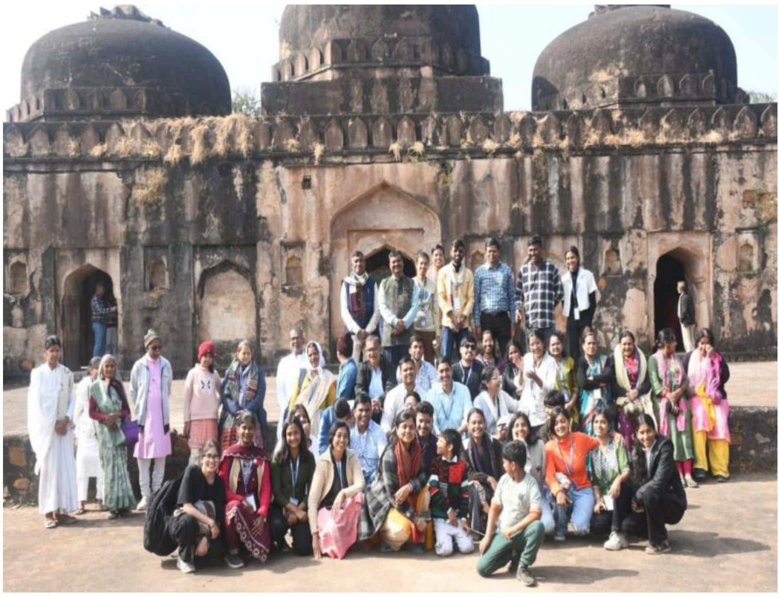

ऐतिहासिक महत्व:

इस दुर्ग का निर्माण 16वीं शताब्दी में गढ़ा-मंडला राज्य के शासक राजा सूरत शाह ने कराया था। बाद में 1605-1627 ई. के मध्य ओरछा के राजा वीर सिंह देव द्वारा इसका पुनर्निर्माण कराया गया।

स्थापत्य: लगभग 52 एकड़ क्षेत्र में विस्तृत इस दुर्ग में मुगल एवं स्थानीय स्थापत्य शैलियों का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है।

दर्शनीय स्थल:

दुर्ग परिसर में रानी महल, कचहरी (न्यायालय कक्ष) तथा प्रसिद्ध सूफी संत बलजाति शाह एवं ऐंथाशाह वली की दरगाह स्थित है।

यह स्थल इतिहासप्रेमियों एवं पुरातत्त्व के विद्यार्थियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

4. मदनपुरः

चतुर्थ गंतव्य उत्तर प्रदेश के ललितपुर जिले में स्थित मदनपुर नगर था, जो बुंदेलखंड क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थल है।

A.पंच मढ़ा: यह एक केंद्रीय पाषाण मंदिर है, जिसके समक्ष पाँच छोटे-छोटे मंदिर या मठ स्थित हैं।

B.मोदी मढ़ा: नगर के उत्तर दिशा में स्थित यह एक प्राचीन दिगंबर जैन मंदिर है।

धार्मिक एवं ऐतिहासिक महत्व:

जैन परंपरा में यह स्थल 'शांतिगिरि' के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ चंदेल शासक मदन वर्मन द्वारा 11वीं शताब्दी में नगर की स्थापना की गई थी।

शिल्प एवं स्थापत्य: यहाँ के मंदिरों में खजुराहो शैली का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। पंचमढ़ा मंदिर परिसर में 11वीं शताब्दी की उत्कृष्ट 'खड्गासन' जैन प्रतिमाएँ तथा महत्वपूर्ण शिलालेख उपलब्ध हैं, जिनमें पृथ्वीराज चौहान के काल (12वीं शताब्दी) के ऐतिहासिक अभिलेख विशेष उल्लेखनीय हैं।

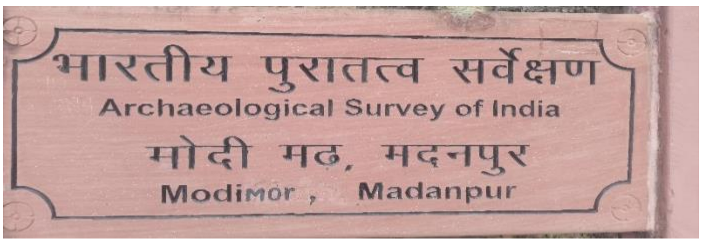

5. गिरारजी:

पंचम गंतव्य गिरारजी दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र था।

स्थिति: यह उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश की सीमा पर ललितपुर जिले में घसान नदी के तट पर दो पर्वतों के मध्य स्थित है।

ऐतिहासिक महत्व: यहाँ का मुख्य मंदिर लगभग 200 वर्ष प्राचीन है।

प्रधान उपास्य: भगवान आदिनाथ जी।

मंदिर संख्या: इस तीर्थक्षेत्र में कुल पाँच मंदिर एवं एक मानस्तंभ स्थित है।

धार्मिक महत्व: यह एक प्रसिद्‌ध अतिशय क्षेत्र है। मान्यता है कि यहाँ की गुफाओं में मुनियों के पदचिह्न तथा प्राचीन शिल्पकला के अवशेष देखे जा सकते हैं।

6. आबार माता मंदिर:

इस द्वितीय शैक्षणिक भ्रमण का अंतिम स्थल बुंदेलखंड का प्रसिद्ध अंबर माता मंदिर था।

स्थिति: यह मंदिर सागर जिले के बांदा क्षेत्र एवं छतरपुर जिले के घुवारा तहसील की सीमा पर स्थित है। यह मंदिर अपनी 70 फीट ऊंची चमत्कारी चट्टान के लिए जाना जाता है, जिसके बारे में मान्यता है कि यह हर साल महाशिवरात्रि पर थोड़ी बढ़ती है।

पौराणिक एवं ऐतिहासिक महत्व: स्थानीय किंवदंतियों के अनुसार, इस मंदिर का निर्माण आला और उदल ने करवाया था, जब वे एक रात महोबा से माधवगढ़ जाते समय यहाँ रुके थे। लोककथाओं के अनुसार, 12वीं शताब्दी में चंदेल वंश के वीर योद्धा आल्हा-ऊदल ने इस मंदिर का निर्माण कराया था। मंदिर से संबंधित बढ़ते शिलाखंड की मान्यता इसे विशेष रूप से अद्भुत बनाती है।

लोकविश्वास: निःसंतान दंपत्तियाँ यहाँ संतान प्राप्ति की कामना से मन्नत करती हैं तथा मन्नत पूर्ण होने पर पुनः दर्शन कर कृतज्ञता प्रकट करती हैं। कुछ स्थानीय मान्यताओं के अनुसार, अबार माता लोधी समाज के लोगों की कुलदेवी हैं।

विशेष पूजा: नवरात्रि के दौरान मंदिर में हर दिन विशेष श्रृंगार और पूजा-अर्चना की जाती है, जिसमें पंचमी और अष्टमी को विशेष महत्व दिया जाता है।

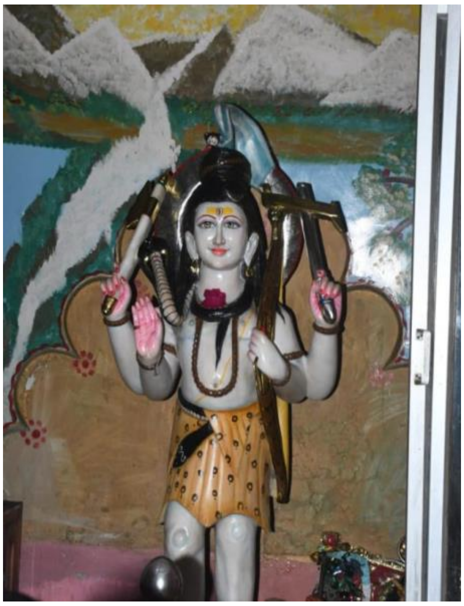

❖ ***मूल्यांकन:***

द्वितीय शैक्षणिक भ्रमण के अंतर्गत कुल छह स्थलों का अवलोकन किया गया। अंबर माता मंदिर को छोड़कर शेष पाँच स्थल सामान्य पर्यटन मानचित्र में अपेक्षाकृत अल्पज्ञात हैं, किंतु जैन परंपरा और भारतीय सांस्कृतिक इतिहास की दृष्टि से इनका महत्व अत्यंत व्यापक है। ये स्थल प्राचीन भारत की धार्मिक, सांस्कृतिक, स्थापत्य एवं कलात्मक परंपराओं के गौरवशाली अतीत के सजीव साक्ष्य हैं।

इन ऐतिहासिक धरोहरों का संरक्षण किसी एक धर्म या समुदाय की नहीं, बल्कि समग्र मानव सभ्यता की साझा जिम्मेदारी है। अंततः इस अत्यंत सुयोजित एवं सार्थक शैक्षणिक भ्रमण के सफल आयोजन हेतु सभी अधिकारियों के प्रति मैं अपनी हार्दिक कृतज्ञता एवं धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ, विशेष रूप से संयोजक डॉ. आशीष जैन आचार्य महोदय के प्रति।

||धन्यवाद||